भूखी

क्या तुम्हीं ने खाए हैं
वे आलूचे जो
बर्फ की पेटी में थे?
वे गायब हैं।
और जिन्हें,
मैं बचा रही थी
नाश्ते के लिए।
मैं माफ
नहीं करूँगी तुम्हें
बस, एक ही
सवाल है।
क्या वे मीठे थे?
क्या वे मज़ेदार थे?

– रॉन्ना चर्चिल, 13 वर्ष, अमरीका
अनुवादः तेजी ग्रोवर

– ज्योति परसाई, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, गनेरा, होशंगाबाद

चिड़िया

चिड़िया रानी बड़ी सयानी
सुन्दर-सुन्दर पंख लगाकर
उड़ती है वह आसमान में
धरती पर आकर दाने चुगती
फिर पंख हिलाकर उड़ जाती
रंग-बिरंगी चिड़ियों के साथ
इतने सुन्दर आसमान में
लगती है वह कितनी सुन्दर
सुबह-सुबह यह चीं-चीं
करकर जगा देती है
सभी घरों को।

– सोनाली, छटवीं, कानपुर

जादुई टोपी

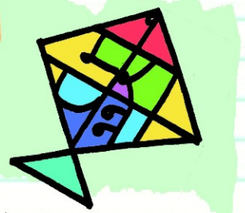

एक था राजू। वह बचपन से ही अनाथ था। इसलिए अपनी मौसी के पास रहता था। उसकी मौसी बहुत गन्दी थी उससे काम करवाती थी। वह तंग आकर पास के जंगल में चला गया। बहुत तेज़ हवा आ रही थी। सामने एक गुफा थी। वह उस गुफा के अन्दर चला गया। वहाँ से चिल्लाने की आवाज़ आई - बचाओ। वह बाहर आया। उसने देख जंगल के बीच एक आदमी फँसा है। उसने उस आदमी की मदद की और उसे खींचकर बाहर निकाला। उस आदमी ने कहा तुम्हारा अहसान तो मैं कभी नहीं भुलूँगा। हाँ, तुम्हें मैं एक चीज़ ज़रूर दे सकता हूँ। ये तीन टोपियाँ। राजू ने कहा- अभी ज़्यादा ठण्डी भी नहीं पड़ी तो तुम मुझे यह टोपी क्यों दे रहे हो? नहीं, उस आदमी ने कहा। यह सर ढँकने के लिए नहीं, जादुई टोपी है। इस टोपी से तुम छोटे हो जाओगे। दूसरी टोपी पहनोगे तो बहुत बड़े हो जाओगे। तीसरी टोपी पहनोगे तो गायब। ये तीनों टोपियाँ जादुई हैं। उन टोपियों से उसने सबकी मदद की।

– नाम, पता नहीं लिखा

– अलए खान, पहली, भोपाल

मैं खण्डवा रैली में गया

मैं खण्डवा गया। रास्ते में मुझे बहुत सारे रुई के पौधे मिले और मैंने नर्मदा नदी में नहाया भी। रास्ते में मैंने पोहे भी खाए। वह पोहे बहुत स्वादिष्ट थे। इन सब के बाद मैं सो गया। उसके बाद मैं खण्डवा पहुँच गया। फिर हम एक बहुत बड़ी रैली में गए। काफी देर बाद मुझे प्यास लगी तो हम एक दुकान पर रुके। उस दुकान का नाम था - अर्चना क्रॉकरी हाउस। तब तक रैली बहुत दूर निकल चुकी थी। तो पापा के एक दोस्त ने हमें रैली तक पहुँचाया। उसके बाद हम एक पुल के ऊपर से निकले। पुल पर से मुझे एक रेल दिखाई दी। उसके बाद हम गुरू गोविन्द स्टेडियम पहुँच गए। उधर बच्चों ने गाना भी गाया। अरे, सबसे ज़रूरी बात तो मैं भूल ही गया। वो बात है कि हम उधर किस वजह से गए थे। अभी जो बाँध बना था उससे जिन लोगों के घर डूब गए थे उन लोगों की रैली थी। इसमें हम गए थे। हमने नारे भी लगाए। हम सब एक हैं - लड़ेंगे, जीतेंगे। और हम जब इन्दौर आ रहे थे तब गाड़ी का टायर पंचर हो गया। जब तक टायर लगा रहे थे तब तक मैंने वापस से पोहे खा लिए। उसके बाद हम आगे गए तो पैट्रोल खतम हो गया। तो हमने पैट्रोल पम्प तक गाड़ी को धक्का लगाया। और पैट्रोल भरवाया और फिर हम इन्दौर पहुँच गए।

– कार्तिक तिवारी, दूसरी, इन्दौर, म. प्र.

– गायत्री, चौथी, मुम्बई

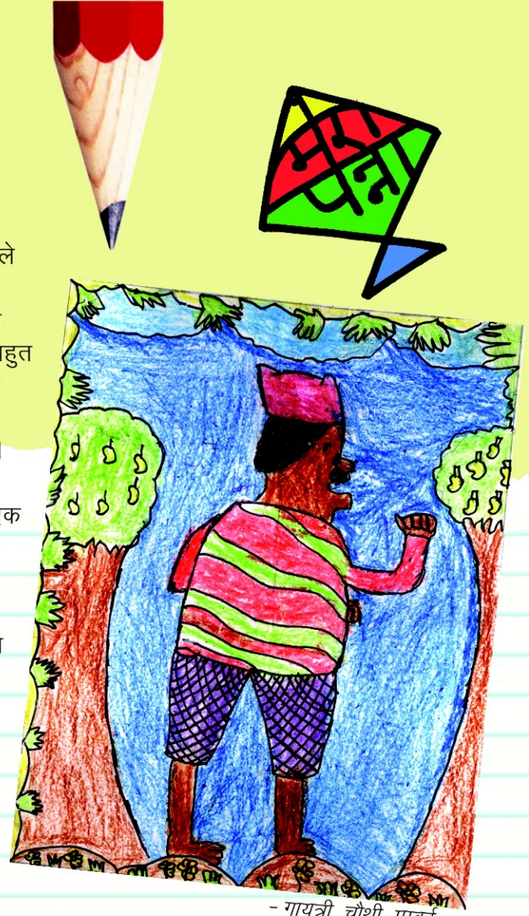

मेरे पापा

मेरे पापा एक पेड़ हैं
जिनकी छाँव में सबके लिए जगह है।
जिनकी गोद में बच्चों का समय है।
उनकी डाल-डाल में फूल बरसते हैं।
उनके दिल में सबके लिए जगह है।
और कभी-कभी उन्हें सब पर
गुस्सा आता है।
पर वैसे उनका दिल इतना नाजुक है
कि टूट जाता है।
पर गुस्सा सिर्फ हमारी भलाई के लिए
चाहे गुस्सा हो या हँसी
मेरे पापा सबसे अच्छे हैं।

– अवनी गंगोला, दूसरी, देहरादून

कोयल बोले आओ न
बिस्कुट हमें खिलाओ न
मीठा गीत सुनाऊँगी
बिस्कुट खा उड़ जाऊँगी।

– प्रस्तुतिः हिमांशु जयसवाल, पहली

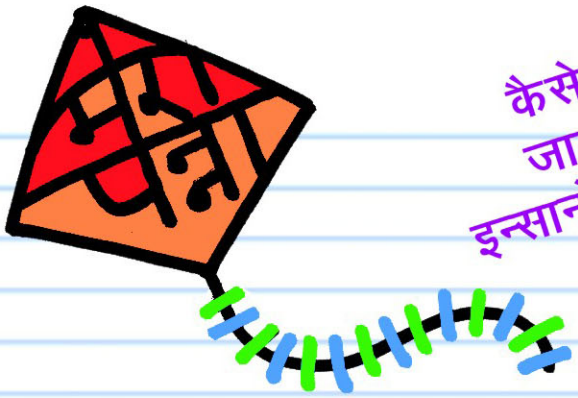

कैसे होती है जानवर और इन्सानों की भाषा

कैसे होती है जानवर और इन्सानों की भाषा,
अगर देखूँ बिल्ली को तो करती म्याऊँ-म्याऊँ,
अगर देखूँ कुत्ते को तो करता भौं-भौं,
अगर देखूँ कोयल को तो करती कुक कुहू,
कैसी है ये दुविधा।
मैं तो हूँ छोटा बच्चा पर समझ कितनी भाषा,
अगर समझूँ इन्सानों की भाषा तो गुस्सा होगा मेरा प्यारा कुत्ता,
अगर समझूँ कुत्तों की भाषा तो गुस्सा होगा बिल्ला मामा,
अगर समझूँ बिल्लियों की भाषा तो गुस्सा होगी कोयल अम्मा,
आप अब यह सोचते होंगे की मैं हूँ कौन,
जिसका जानवर और इन्सानों दोनों के साथ सम्बन्ध है मैं हूँ मोगली

–सचेत माखीजा, 12 साल, दुर्ग, छत्तीसगढ़

गर्मी की छुट्टियों में

इन गर्मियों की छुट्टियों में
दादी के यहाँ जाऊँगा
खूब किस्से-कहानी सुनूँगा
परीलैंड की सैर करूँगा

इन गर्मियों की
छुट्टियों में
जमुना जीजी के यहाँ
लगे जामुन खाऊँगा
झूला झूलूँगा
जाम के पेड़ पर

इन गर्मियों की
छुट्टियों पर
नानी के घर जाऊँगा
नानकराम की बेकरी की
खूब नानखटाई खाऊँगा।
थैलों में भर-भरकर
जाम-जामुन लाऊँगा
दोस्तों को खिलाऊँगा।

–जितेन्द्र चौहान, इन्दौर

–पवनीत, चौथी, दुर्ग, छत्तीसगढ़

मैं वोट डालने गया...

पिछली बार मैं वोट नहीं डाल पाया था। इसलिए मैंने पापा से बोला कि इस बार मैं भी वोट डालने जाऊँगा। मैं पापा-मम्मी के साथ अन्दर कमरे में गया। वहाँ पर एक अंकल ने पूछा कि तुम भी वोट डालने आए हो तो मैंने बोला, हाँ। उन अंकल ने उल्टे हाथ की उँगली पर निशान लगाया फिर हम बक्से के पीछे गए। वहाँ पर पापा ने धीरे-से बोला कि ये बटन दबाओ तो मैंने वो वाला बटन दबाया।

-इशान निगम, तीसरी, भोपाल, म. प्र.

तारों की दुनिया

तारों के ख्वाब देखें है मैंने
नींद टूटी ख्वाब टूटा।
मगर अभी भी खोई हूँ उसमें
गिन लिए थे सैकड़ों तारे
नहीं गिन पाई उसके आगे
गिनना चाहती हूँ उसके आगे
फिर टूट जाएगा ख्वाब
मगर खोई रहूँगी उसमें

–पवी गौड़, देहरादून